हम क्या करते हैं?

सनातन धर्म आठ प्रकार के व्यवहार धार्मिक जीवन के लिए अनुकूल बताता है। ये व्यवहार “अचरा” कहलाते हैं।

वैष्णवाचार – का अर्थ है अपनी प्रेरणा ढूँडना है।
वेदिकाचार – का अर्थ है जिसे हम प्यार करते हैं उसके विषय के बारे मैं जानना।
शैवाचार – का अर्थ है जो हमे जानकारी मिली उसे उपयोग मे लाना।
वामाचार – का अर्थ है “प्रेम पूर्वक व्यवहार,” जीवन मे हर कार्य निपुणता से करना
दक्षिणचार – का अर्थ है “श्रेष्टतर माग,” अपने संसारिक कार्य करने के लिए आवश्यकता कम करें।
सिद्धान्ताचार – का अर्थ है अपने आचरण को ग्रन्थों में बताये गये कार्यो के अनुकूल बनायें। ये व्यवहार सात हैं

पूजा
पाठ
होम
संगीत
नृत्य
प्रवचन
अर्पण

योगाचार – का अर्थ है “व्यवहार में तालमेल”
कलाचार – का अर्थ है “व्यवहार में उत्तमता,” चाहे साधना में बिना हिले बैटना हो या किसी लक्ष्य की प्राप्ति हो जीवन की प्रत्येक स्थिती मे भावना समान रहे।

देवी मन्दिर में हम आठ प्रकार के विभिन्न व्यवहारों की जानकारी तथा उनका अभ्यास प्राप्त करते हैं। ये व्यवहार अध्यात्मिक खोज करने वाले प्रचीन काल से कर रहे हैं।